

भक्ति आंदोलन

ईश्वर से प्रेम
सबके लिए समान अधिकार
यही है भक्ति की शक्ति

1. अवधारणा, पृष्ठभूमि एवं उत्पत्ति के सिद्धांत

भक्ति आंदोलन मध्यकालीन भारत का एक युगांतकारी धार्मिक-सांस्कृतिक और सामाजिक आंदोलन था, जिसने कर्मकांडीय जटिलता और जातिगत स्तरीकरण को चुनौती देकर ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम, व्यक्तिगत समर्पण और सामाजिक समता पर बल दिया।

भक्ति
= प्रेम
+ समर्पण
+ समता

न जाति
न पंथ
न भेद
सबका एक
ईश्वर

उत्पत्ति एवं विकास का भौगोलिक क्रम



“भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाये रामानंद। परगट कियो कबीर ने, सप्त द्वीप नौ खंड॥”

उत्पत्ति के प्रमुख आधुनिक एवं ऐतिहासिक सिद्धांत

1 इस्लाम की प्रतिक्रिया का सिद्धांत

डॉ. ताराचंद, हुमायूं कबीर और यूसुफ हुसैन के अनुसार, भारत में इस्लाम के एकेश्वरवाद और समानता के सिद्धांत ने भक्ति आंदोलन को प्रेरित किया।

एक ईश्वर
समानता
भाईचारा

2 ईसाइयत का प्रभाव (आंशिक मत)

जॉर्ज ग्रियर्सन ने इसे बाह्य ईसाई प्रभाव माना, जिसे परवर्ती अधिकांश इतिहासकारों ने खारिज किया।



3 आंतरिक विकास का सिद्धांत (सर्वाधिक प्रमाणिक)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, यह भारतीय चिंतन परंपरा (उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता और भागवत पुराण) का ही स्वाभाविक और आंतरिक विकास था।



4 सामंतवाद और सामाजिक संकट की प्रतिक्रिया

इरफान हबीब और रामशरण शर्मा जैसे इतिहासकारों ने इसे तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक ढांचे, सामंती दबाव और द्रष्टकारों/शिल्पकारों के सामाजिक उत्थान की आकांक्षा से जोड़कर विश्लेषित किया।



— भक्ति का संदेश — प्रेम, समता और मानवता —

2. दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन: नयनार एवं आलवार

तमिल क्षेत्र में भक्ति आंदोलन पल्लव, चोल और पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण अथवा उनके समकालीन कालखंड में विकसित हुआ।



आलवार (वैष्णव संत)

• कुल संख्या : 12



• प्रमुख ग्रंथ : दिव्य प्रबंधम्

(तमिल वेद के रूप में मान्य,
संकलनकर्ता : नाथमुनि)

दिव्य प्रबंधम्

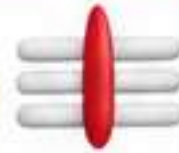


प्रमुख संत :

- पोङ्गई, भूतम, पेय : प्रारंभिक तीन आलवार संत।
- तिरुमंगई आलवार : सबसे उर्ध्वर रचनाकार; जाति व्यवस्था के प्रबल आलोचक।
- पेरियालवार : इन्होंने बाल-कृष्ण की वात्सल्य भाव से स्तुति की।
- आण्डाल : एकमात्र महिला आलवार संत, जिन्हें “दक्षिण की मीरा” कहा जाता है; इनकी प्रसिद्ध रचना तिरुप्पावै है।
- कुलशेखर आलवार : केरल के चेर राजा, जिन्होंने मुकुंदमाला की रचना की।
- नम्मालवार : सबसे प्रसिद्ध आलवार संत; इनके पद तिरुवायमोली में संकलित हैं।

नयनार (शैव संत)

• कुल संख्या : 63



• प्रमुख संकलन : तिरुमुरै

(संकलनकर्ता : नंब्रियांडार नंबी)



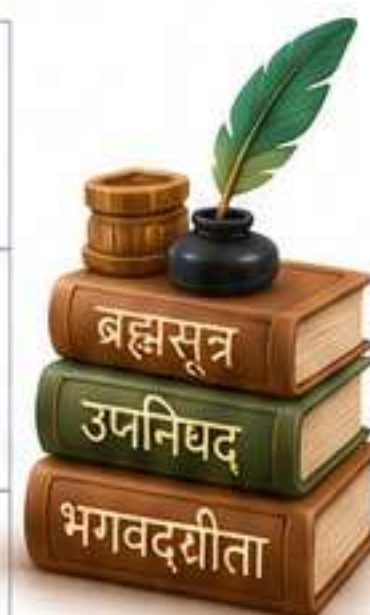
प्रमुख संत (मुवर - तीन प्रमुख संत) :

- अप्पार : पल्लव शासक महेंद्रवर्मन प्रथम को शैव धर्म में दीक्षित किया।
- संबंदर : पाण्ड्य राजा नेडुमारन को शैव बनाया।
- सुंदरर : भगवान शिव के सखा भाव के उपासक।
- माणिक्यवाचकर : तिरुवाचकम् के रचयिता (यद्यपि यह 63 में सीधे नहीं गिने जाते, परंतु अत्यंत उच्च स्थान प्राप्त है)।
- करैक्काल अम्मैयार : प्रमुख महिला नयनार संत, जिन्होंने धोर तपस्या का मार्ग चुना।

3. दक्षिण के प्रमुख दार्शनिक आचार्य एवं उनके मत

दार्शनिक आचार्यों ने भक्ति को बौद्धिक और वेदांतिक धरातल पर प्रतिष्ठित किया।

आचार्य	काल	दर्शन/सिद्धांत	संप्रदाय	मुख्य शिक्षा व ग्रंथ
 आदि शंकराचार्य	8वीं शताब्दी (788-820 ई.)	अद्वैतवाद	स्मार्त संप्रदाय	‘ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या’, प्रस्थानत्रयी पर भाष्य; चारों दिशाओं में 4 पीठों की स्थापना।
 रामानुजाचार्य	11वीं-12वीं शताब्दी (1017-1137 ई.)	विशिष्टाद्वैतवाद	श्री संप्रदाय	जीव और जगत ब्रह्म के विशेषण हैं; श्रीभाष्य एवं गीताभाष्य के रचयिता।
 माधवाचार्य	13वीं शताब्दी (1199-1278 ई.)	द्वैतवाद	ब्रह्म संप्रदाय	ईश्वर और जीव में पूर्ण भेद है; पंच-भेद का सिद्धांत प्रतिपादित किया।
 निंबार्काचार्य	13वीं शताब्दी	द्वैताद्वैतवाद (भेदाभेद)	सनक संप्रदाय	राधा-कृष्ण की युगल उपासना; वेदांत पारिजात सौरभ ग्रंथ।
 वल्लभाचार्य	15वीं-16वीं शताब्दी (1479-1531 ई.)	शुद्धाद्वैतवाद	रुद्र संप्रदाय	पुष्टि-मार्ग के संस्थापक; भगवान के अनुग्रह (पुष्टि) पर बल; अणुभाष्य की रचना।



भक्ति
बुद्धि और
अनुभूति का
सुंदर संगम
है ❤️